

[2023] 4 एस. सी. आर. 596

अभिषेक सिंह

बी.

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर।

(सिविल अपील सं. 2241 2023 का)

28 मार्च, 2023

[बी. आर. गवई और विक्रम नाथ, जे. जे.]

दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016: एसएस। 9 और 12 ए-एस की व्याख्या। 12 ए और विनियमन 30 ए-निगमित दिवाला समाधान प्रक्रिया-सी. आई. आर. पी. के आवेदन को वापस लेना लेनदारों की समिति का गठन-सी. ओ. सी.-आयोजित की वैधता: s.12A यू/एस. एस. द्वारा स्वीकार किए गए आवेदनों को वापस लेने की अनुमति देता है। 7 , 9 और 10-s। 12 ए. सी. ओ. सी.-आवेदन यू/एस. के गठन से पहले भी निकासी के लिए आवेदनों पर रोक नहीं लगाता है। 12 ए को सीओसी के गठन के लिए लंबित नहीं रखा जा सकता है, यहां तक कि जहां ऐसा आवेदन सीओसी के गठन से पहले दायर किया गया था-इसके अलावा,

विनियमन 30 ए में सी. ओ. सी. के गठन से पहले निकासी आवेदनों पर विचार करने के लिए स्पष्ट रूप से प्रावधान किया गया है-यह किसी भी तरह से नहीं है

संघर्ष या एस का उल्लंघन है। 12 ए-दोनों प्रावधानों में कोई विसंगति नहीं है-यह केवल एस के माध्यम से पेश किए गए कारण को आगे बढ़ाता है। 12 ए-तथ्यों पर, याचिका यू / एस. 9 परिचालन लेनदार-ओ. सी. द्वारा एन. सी. एल. टी. के समक्ष निगमित देनदार के खिलाफ बकाया राशि के लिए दायर किया गया

सी. डी. याचिका स्वीकार की गई और सी. आई. आर. पी. शुरू की गई-दो दिनों के भीतर

प्रवेश आदेश, ओ. सी. और सी. डी. ने भुगतान के लिए समझौता किया

सी. ओ. सी. के गठन से पहले भी राशि का-निपटान राशि की प्राप्ति के बाद, ओ. सी. ने यू/एस. आवेदन दायर किया। 12 ए और अंतरिम समाधान पेशेवर ने सी. डी. के खिलाफ सी. आई. आर. पी. को वापस लेने की मांग करते हुए यू/रेंज 30 ए के तहत एक आवेदन दायर किया-हालांकि, एन. सी. एल. टी. ने वापस लेने के आवेदन को खारिज कर दिया-कहा कि आदेश को बनाए नहीं रखा जा सकता है-एन. सी. एल. टी. ने इसके विपरीत दृष्टिकोण रखने में गलती की-उस समय जब कार्यवाही को वापस लेने के लिए आवेदन दायर किया गया था, सी. ओ. सी. नहीं था।

ओ. सी., सी. डी. और आई. आर. पी. को छोड़कर कोई अन्य संबंधित पक्ष नहीं हो सकता था-यह केवल आवेदनों के निपटारे में एन. सी. एल. टी. के कारण हुई देरी के कारण था। 12 ए और रेंज 30 ए कि बड़ी संख्या में लेनदारों ने अपने दावे दायर किए -

न्याय के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अंतर्निहित शक्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए, जिन्हें एन. सी. एल. टी. लागू करने में विफल रहा-इस प्रकार, यू/रिग 30 ए के तहत दायर आवेदन की अनुमति दी गई और यू/एस के तहत आवेदन किया गया। 9 ओ. सी. द्वारा दायर स्टैंड

596 अभिषेक सिंह बनाम। हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर।

भारतीय दिवाला और दिवालियापन बोर्ड (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) विनियम, 2018-विनियमन। 30 ए.

अपील को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

पकड़ना: 1.1 वैकल्पिक उपचार की याचिका स्वयं थोपी गई है।

उच्चतर न्यायालयों द्वारा प्रतिबंध और यह कभी भी एक पूर्ण प्रतिबंध नहीं है जब तक कि कानून द्वारा वर्जित न हो। इसके अलावा, वर्तमान मामले में, यह

अदालत ने 2021 में ही एसएलपी पर विचार किया था और 20.04.2021 पर यथास्थिति का आदेश दिया था। तब से काफी समय बीत चुका है। इस प्रकार यह न्यायालय एन. सी. एल. टी. के समक्ष अपील दायर करने के वैकल्पिक उपाय की उपलब्धता से संबंधित उक्त आपत्ति पर विचार करने के लिए इच्छुक नहीं है। आई. बी. सी. मामलों के निपटारे के लिए एक वैधानिक समय सीमा प्रदान करता है। इसके अलावा, ऐसे मामलों को लंबे समय तक लंबित रखते हुए व्यावसायिक प्रकृति के होने से आई. बी. सी. का उद्देश्य ही विफल हो जाता है। [पैरा 25] [609-ई-जी]

1.2 हस्तक्षेप करने वालों ने जोरदार तर्क दिया है कि 01.03.2021 के बाद, एक बार NCLT ने याचिका को स्वीकार कर लिया है और

जारी प्रतिबंध आदेश, आई. बी. सी. की धारा 14 लागू हो गई थी; सी. डी. के खातों में किए गए लेनदेन गैरकानूनी और अवैध होंगे क्योंकि सी. डी. के धन से निपटान राशि का भुगतान निलंबित व्यक्ति के खाते में स्थानांतरित किया जाता है। 01.03.2021 के बाद निदेशक को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए और कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति देने के लिए किसी भी विवेक का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। यहां तक कि एन. सी. एल. टी. भी आई. आर. पी. जमा करने से संतुष्ट नहीं था और न ही उसने इसे मंजूरी दी है। दूसरा, भले ही सीडी के खाते से कोई लेनदेन हुआ हो, वही सबसे अच्छा हो सकता है

गलत लेन-देन माना जाता है और किसी भी अन्य कार्यवाही में जहां सी. आई. आर. पी. शुरू की जाती है, इस तरह से हस्तांतरित राशि को आई. आर. पी. या आर. पी. द्वारा आई. बी. सी. की धारा 66 के तहत यह स्थापित करने के अधीन किया जा सकता है कि उक्त लेनदेन उक्त प्रावधान से प्रभावित होंगे। [पैरा 26] [609-जी-एच; 610-ए-सी]

1.3 अन्य लेनदारों को अपने दावों के संबंध में कानून के तहत उपलब्ध कानूनी उपायों का लाभ उठाने का अपना अधिकार होगा। यदि तत्काल मामले में ओ. सी. के साथ समझौता स्वीकार कर लिया जाता है और कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति दी जाती है तो लेनदारों के अपने-अपने दावों के अधिकार कम या प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं होते हैं। [पैरा 27] [610-डी] [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

1.4 आई. आर. पी. द्वारा खर्च की गई कोई भी राशि उसके लिए कानूनी रूप से स्वीकार्य है।

उसी कार्यवाही में हमेशा वसूली की जा सकती है और एन. सी. एल. टी. या न्यायनिर्णायक प्राधिकरण आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए के खंड 7 के तहत इसे मंजूरी प्राप्त करने के लिए अपनी शक्ति के भीतर होगा। [पैरा 28] 1.5 एन. सी. एल. टी. ने यह अभिनिर्धारित करने में त्रुटि की कि विनियमन 30 ए का कोई बाध्यकारी प्रभाव नहीं होगा। यह विनियमन 30 ए को प्रतिस्थापित करने के उद्देश्य को विफल करने के बराबर होगा।

विशेष रूप से ऐसी स्थिति के लिए प्रावधान नहीं है जिसमें सी. ओ. सी. का गठन नहीं किया गया है, लेकिन न्यायालय ने कहा कि धारा 12 ए सी. ओ. सी. के गठन से पहले भी सी. आई. आर. पी. को वापस लेने के लिए आवेदनों पर विचार करने पर रोक नहीं लगाती है। इसलिए, निकासी के लिए धारा 12 ए के तहत आवेदन को लंबित नहीं रखा जा सकता है। सी. ओ. सी. का गठन, यहां तक कि जहां इस तरह का आवेदन सी. ओ. सी. के गठन से पहले दायर किया गया था। आई. बी. सी. के प्रतिस्थापित विनियमन 30 ए, जैसा कि आज है, सी. ओ. सी. के गठन से पहले निकासी आवेदनों पर विचार करने के लिए स्पष्ट रूप से प्रदान किया गया है। यह किसी भी तरह से आई. बी. सी. की धारा 12 ए का उल्लंघन नहीं करता है। दोनों प्रावधानों में कोई विसंगति नहीं है। यह केवल आई. बी. सी. की धारा 12 ए के माध्यम से पेश किए गए कारण को आगे बढ़ाता है। एन. सी. एल. टी. ने इसके विपरीत दृष्टिकोण रखने में गलती की। [पारस 34 और 35] [612-एफ-जी; 613-ए-सी]

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण (एन. सी. एल. टी.) इस पर आदेश पारित करेगा तकनीकीताओं पर खड़े हुए बिना निकासी आवेदन। [पैरा 39] [614-ई-एफ] अभिषेक सिंह बनाम।

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर।

विनियम 30 ए के अनुसार बड़ी संख्या में लेनदारों ने अपने दावे दायर किए। उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अंतर्निहित शक्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए न्याय का, जो हमारी राय में, एन. सी. एल. टी. लागू करने में विफल रहा। आई. बी. बी. आई. विनियमों का विनियम 30 ए एक पूर्ण प्रावधान प्रदान करता है

इस तरह के प्रावधान के तहत दायर आवेदनों से निपटने के लिए तंत्र। खर्च के लिए अपने दावे के संबंध में आई. आर. पी. द्वारा उठाए गए मुद्दे पर उक्त प्रावधान के तहत अच्छी तरह से ध्यान दिया जाता है। आई. बी. बी. आई. के विनियम 30 ए में विभिन्न सुरक्षा उपाय प्रदान किए गए हैं।

ओ. सी. द्वारा पूरे किए जाने वाले विनियम जो स्पष्ट रूप से पूरे किए गए हैं क्योंकि इस संबंध में न तो आई. आर. पी. द्वारा कोई शिकायत है और न ही यह एन. सी. एल. टी. के विवादित आदेश से स्पष्ट है। इस प्रकार, आई. आर. पी. द्वारा उठाई गई आपत्ति इस अपील में किसी भी विचार के योग्य नहीं है। [पैरा 40,41] [614-जी-एच; 615-ए-सी]

आई. बी. बी. आई. के विनियम 30 ए के तहत आवेदन के साथ नियम। ओ. सी. द्वारा दायर आई. बी. सी. की धारा 9 के तहत आवेदन वापस ले लिया जाएगा। [पैरा 43] [615-डी]

स्विस रिबन (पी) लिमिटेड बनाम भारत संघ (2019) 4 एससीसी 17: [2019] 3 एससीआर 535; कमल K.Singh वी। दिनेश गुप्ता और अन्ना , सिविल अपील सं. 4993 में दिनांक 25.08.2021
2021 - पर भरोसा किया।

(2019) एस. सी. सी. ऑनलाइन एन. सी. एल. ए. टी. 146; भारतीय प्रवासी बैंक वी. श्री दिनकर टी. वेंकटसुब्रमण्यम, एमटेक ऑटो लिमिटेड (2017) एससीसी के लिए समाधान पेशेवर

ऑनलाइन NCLAT 584; मनोज के. डागा बनाम। आई. एस. जी. ई. सी. हैवी इंजीनियरिंग लिमिटेड और अन्य (2020) एस. सी. सी. ऑनलाइन एन. सी. एल. ए. टी. 869; नारायणम्मा और अन्य। वी.

पा [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और ओआरएस। (2019) 19 एस. सी. सी. 42; राम सरन दास बनाम सीटीओ

कलकत्ता और अन्न। ए. आई. आर. 1962 एस. सी. 1362; टीटाघुर पेपर

मिल्स कं. लिमिटेड बनाम उड़ीसा राज्य (1983) 2 एससीसी

433 : [1983] 2 एस. सी. आर. 743-संदर्भित।

मामला कानून संदर्भ

[2019] 3 एससीआर 535

उस पर भरोसा करें

पै

रा 17

(2021) 6 एस. सी. सी. 258

पै

रा 22

संदर्भित किया गया है

(2021) 10 एससीसी 330

पै

रा 22

संदर्भित किया गया है

(2019) 19 एस. सी. सी 42

संदर्भित किया गया है

पै

रा 22

पै

रा 22

एआईआर 1962 एससी 1362

संदर्भित किया गया है

रा 22

संदर्भित किया गया है

सिविल अपील न्यायनिर्णय: सिविल अपील No.2241

2023 तक।

राष्ट्रीय संविधान के 13.04.2021 दिनांकित निर्णय और आदेश से

2021 के आई. ए. No.196 में कंपनी विधि न्यायाधिकरण।

श्याम दीवान, वरिष्ठ अधिवक्ता।, अभिजीत सिन्हा, महेश अग्रवाल, नचिकेत

डेव, हिमांशु सतीजा, सुश्री स्वरूप जॉर्ज, ई. सी. अग्रवाल, प्रद्युम्न गोहिल, श्रीमती तरुणा सिंह गोहिल, सुश्री रानू पुरोहित, अलापति साहित्य कृष्ण, अधिवक्ता। अपीलार्थी के लिए।

तुषार मेहता, एस. जी., कानू अग्रवाल, सौरभ राँय, सुश्री दीपावली

दत्ता, सुश्री रुचि गौर नरूला, अरविंद कुमार शर्मा, सुश्री अन्वया घोष, किंशुक चटर्जी, अनिरुद्ध संगनेरिया, शमिक शिरीषभाई संजनवाला, समीर अभ्यंकर, सार्थक घोंक्रोक्टा, सुनील फर्नांडीस, सुश्री प्रियांशा शर्मा, दिव्यांशु तिवारी, अधिवक्ता। उत्तरदाताओं के लिए।

विक्रम नाथ, जे।

छुट्टी दे दी गई।

2. अपीलार्थी, निगम का एक निलंबित निदेशक

देनदार 1: मनपासंद बेवरेजेस लिमिटेड (प्रतिवादी 2) ने अहमदाबाद में राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण 2, अहमदाबाद पीठ द्वारा पारित दिनांक 13.04.2021 के आदेश की शुद्धता पर आरोप लगाते हुए यह अपील दायर की है।

1 संक्षेप में "सीडी"

2 संक्षेप में, "एन. सी. एल. टी". अभिषेक सिंह बनाम।

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

सी. पी. से उत्पन्न 2021 का आई. ए. No.196 (आई. बी.) निगमित दिवाला समाधान प्रक्रिया 4 को वापस लेने के लिए दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016 3 की धारा 12 ए के तहत अपीलार्थी के आवेदन को खारिज करते हुए 2019 का <आईडी1।

3. सीडी फल पेय पदार्थों के निर्माण और वितरण के व्यवसाय में है। इसमें लगभग 700 कर्मचारी हैं और इसका कारोबार

रु. 984.96 वित्तीय वर्ष में करोड़ 2018-2019। परिचालन लेनदार हुहतामाकी पी. पी. एल. लिमिटेड (प्रतिवादी संख्या 1) पैकेजिंग की आपूर्ति करता था।

सीडी के लिए सामग्री।

4. ओ. सी. ने एन. सी. एल. टी. के समक्ष आई. बी. सी. की धारा 9 के तहत एक याचिका दायर की, जिसमें कहा गया कि सी. डी. के खिलाफ कुल बकाया राशि रु. 1,31,00,825/- है। इसे 2019 के सीपी (आईबी) संख्या 503 के रूप में पंजीकृत किया गया था। 5. एन. सी. एल. टी. ने दिनांक 01.03.2021 के आदेश द्वारा याचिका को स्वीकार करते हुए सी. आई. आर. पी. शुरू करने का आदेश पारित किया। इसके दो दिन बाद यानी 03.03.2021, ओ. सी. और सी. डी. ने एक समझौता किया जिसमें सी. डी. को रुपये की राशि का भुगतान करना था। 95.72 लाख। ऋणदाताओं की समिति के गठन से पहले ही उपरोक्त समझौता हो गया था।

6. 4 मार्च, 2021 को, ओ. सी. को <आई. डी. 1 लाख प्राप्त हुए और फिर 8 मार्च, 2021 को, उन्हें 1 करोड़ रुपये की शेष राशि प्राप्त हुई। 45.72 लाख।

इस प्रकार, निपटान के अनुसार भुगतान की जाने वाली कुल राशि का भुगतान ओसी को किया गया था। अंतरिम समाधान पेशेवर 7 ने 10 मार्च, 2021 को भारतीय दिवाला और दिवालियापन बोर्ड (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) विनियम, 2018 3 के विनियम 30 ए के तहत एक आवेदन दायर किया जिसमें सीडी के खिलाफ सी. आई. आर. पी. को वापस लेने की मांग की गई। इसके साथ 09.03.2021 दिनांकित ओसी का आवेदन भी संलग्न किया गया था जिसे आईबीसी की धारा 12 ए के तहत स्थानांतरित किया गया था। निकासी के लिए आवेदन 2021 के आई. ए. संख्या 196 के रूप में पंजीकृत किया गया था।

7. इस बीच, राष्ट्रीय कंपनी कानून अपीलीय के समक्ष दिनांकित 01.03.2021 प्रवेश आदेश के खिलाफ एक अपील दायर की गई थी।

न्यायाधिकरण 'जाहिरा तौर पर इस आधार पर कि आई. बी. सी. याचिका की धारा 9 विचारणीय नहीं थी क्योंकि एक पूर्व-विद्यमान विवाद था। 26.03.2021 पर,

8 संक्षेप में "आईबीबीआई विनियम" सी. आर.

9 संक्षेप में "एन. सी. एल. ए. टी.". [2023] 4 एस.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

समझौता विफल होने की स्थिति में पुनरुद्धार और अपील के लिए आवेदन करने की स्वतंत्रता के साथ एन. सी. एल. ए. टी. के समक्ष आई. को वापस ले लिया गया था। एन. सी. एल. ए. टी. ने अपील वापस लेने की अनुमति देते हुए सी. ओ. सी. के गठन पर रोक लगा दी। ने कहा कि

दिनांकित 26.03.2021 नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

2. अपीलार्थी के विद्वान वकील प्रस्तुत करते हैं कि आवेदन को विवादित आदेश द्वारा स्वीकार किया गया था और अपील दायर की गई है। यह कहा गया है कि इसके बाद अपीलार्थी ने दावे का निपटारा कर दिया है - परिचालन लेनदार और परिचालन लेनदार ने दायर किया है

अधिस्थगन का उल्लंघन करते हुए जिसे आई. आर. पी. ने सूचित किया है न्यायनिर्णायक प्राधिकरण।

3. श्री हितेश बुक, पी. सी. एस. भी इस बात से सहमत हैं कि समझौता हो गया है।

जगह।

4. अपीलार्थी के विद्वान वकील प्रस्तुत करते हैं कि इन तथ्यों पर विचार करते हुए, आई. बी. सी. की धारा 12 ए के संबंध में प्रयास में कठिनाई होने की स्थिति में पुनर्स्थापना की मांग करने की स्वतंत्रता के साथ अपील को वापस लेने की अनुमति दी जा सकती है। आई. आर. पी. के लिए विद्वान वकील स्वीकार करते हैं कि ऋणदाताओं की समिति (संक्षेप में सी. ओ. सी.) का गठन नहीं किया गया है। 5. अपीलार्थी का विद्वान वकील प्रस्तुत करता है कि वह अपीलार्थी के निर्देशों के तहत अपील को वापस लेने का अनुरोध कर रहा है।

अभिषेक सिंह बनाम। हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

6. आई. बी. सी. के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, हमारे पास इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि यदि मूल परिचालन ऋणदाता और निगमित ऋणदाता के बीच समझौता हुआ है, तो तकनीकी आधार पर खड़े हुए बिना न्यायनिर्णायक प्राधिकरण उचित आदेश पारित करेगा।

7 (क) ऊपर बताए गए कारणों से, अपील को वापस लेने की अनुमति दी गई है और मामले में अपील को बहाल करने की अनुमति दी गई है। भविष्य में किसी भी समय धारा 12 ए के संदर्भ में समझौता करने का प्रयास

आई. बी. सी. मुश्किल में पड़ता है और ऐसा नहीं होता है।

7 (बी) जब तक न्यायनिर्णायक प्राधिकरण आई. बी. सी. की धारा 12 ए के तहत आवेदन का फैसला नहीं करता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह पहले ही दायर किया जा चुका है।

सीओसी का गठन नहीं किया जा सकता है।

अपील का निपटारा उपरोक्त टिप्पणियों और निर्देशों के साथ किया जाता है।

8. एन. सी. एल. टी. ने विवादित निर्णय और दिनांक 13.04.2021 के आदेश द्वारा निपटान आवेदन को खारिज कर दिया और मामले को निपटान के लिए तय कर दिया।

सभी लेनदारों को सुनने के बाद आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए के तहत आवेदन।

19.04.2021 पर SLP। इस अदालत ने नोटिस जारी करते समय 20.04.2021 दिनांकित आदेश के माध्यम से पक्षों को यथास्थिति बनाए रखने का निर्देश दिया। 10. यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि प्राथमिक विरोध आई. आर. पी. द्वारा एक हस्तक्षेप आवेदन के माध्यम से किया जाता है। ओसी नहीं है

अपील का उतना विरोध करना जितना उसे पहले से ही 03.03.2021 दिनांकित समझौते के अनुसार पूरी राशि प्राप्त हो चुकी थी। इसके अलावा, सीडी के लेनदारों द्वारा हस्तक्षेप/अभियोग के लिए तीन अन्य आवेदन दायर किए गए हैं, जिन्होंने कथित रूप से आईआरपी के समक्ष अपने दावे उठाए थे।

11. आगे बढ़ने से पहले, प्रासंगिक वैधानिक प्रावधानों पर ध्यान दिया जा सकता है।

12. राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण नियम, 2016 का नियम 11 एन. सी. एल. टी. को इसके लिए उचित आदेश पारित करने की अंतर्निहित शक्तियाँ प्रदान करता है।

न्याय के उद्देश्यों को पूरा करना या न्यायाधिकरण की प्रक्रिया के दुरुपयोग को रोकना। उक्त नियम को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

" 11. अंतर्निहित शक्तियाँ-इन नियमों में कुछ भी नहीं माना जाएगा। न्यायाधिकरण की अंतर्निहित शक्तियों को सीमित करना या अन्यथा प्रभावित करना -

10 संक्षेप में "एनसीएलटी नियम" [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

न्याय के उद्देश्यों को पूरा करने या न्यायाधिकरण की प्रक्रिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए ऐसे आदेश देना जो आवश्यक हों।

13. आई. बी. सी. की धारा 12 ए, जिसे डब्ल्यू. ई. एफ. 06.06.2018 जोड़ा गया था, आई. बी. सी. की धारा 7,9 या 10 के तहत स्वीकार किए गए आवेदनों को वापस लेने की अनुमति देती है, जिसमें सी. ओ. सी. के 90 प्रतिशत मतदान हिस्से की मंजूरी दी जाती है। उक्त प्रावधान नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

“ 12 ए. धारा 7,9 या 10 के तहत स्वीकार किए गए आवेदन को वापस लेना न्यायनिर्णायक प्राधिकरण इसे वापस लेने की अनुमति दे सकता है।

लेनदारों की समिति के नब्बे प्रतिशत मतदान हिस्से के अनुमोदन के साथ आवेदक द्वारा किए गए आवेदन पर धारा 7 या धारा 9 या धारा 10 के तहत इस तरह से आवेदन स्वीकार किया जाता है।

जैसा कि निर्दिष्ट किया जा सकता है "।

14. आई. बी. बी. आई. विनियमों का विनियम 30 ए इसके बाद पेश किया गया था।

आई. बी. सी. में धारा 12 ए का सम्मिलन। इसने निकासी के लिए दायर आवेदनों से निपटने का तंत्र प्रदान किया। बाद में, इसे आईबीबीआई विनियमों में दिनांकित 25.07.2019 अधिसूचना द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। उक्त प्रावधान के अनुसार, आई. बी. सी. की धारा 12 ए के तहत वापसी को संविधान से पहले आई. आर. पी. के माध्यम से आवेदक द्वारा न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के समक्ष पेश किया जा सकता है। सी. ओ. सी. और यदि सी. ओ. सी. का गठन किया गया है, तो आवेदक द्वारा आई. आर. पी. या RP.However के माध्यम से भी, आवेदक को कारण बताते हुए निकासी को उचित ठहराना होगा। यह आगे प्रदान करता है

इस तरह के आवेदन से निपटने की प्रक्रिया। आई. बी. बी. आई. विनियमों का विनियम 30 ए, जैसा कि आज भी है, नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

" 30 ए. आवेदन वापस लेना। (1) के लिए आवेदन

धारा 12 ए के तहत वापसी न्यायनिर्णायक को की जा सकती है।

प्राधिकरण -

(क) समिति के गठन से पहले, आवेदक द्वारा अंतरिम समाधान पेशेवर के माध्यम से;

(ख) समिति के गठन के बाद, आवेदक द्वारा अंतरिम प्रस्ताव पेशेवर या प्रस्ताव के माध्यम से

पेशेवर, जैसा भी मामला हो सकता है:

बशर्ते कि जहां विनियमन के तहत रुचि की अभिव्यक्ति के लिए निमंत्रण जारी होने के बाद खंड
(बी) के तहत आवेदन किया जाता है
36 ए, आवेदक निकासी को उचित ठहराते हुए कारण बताएगा।

इस तरह के निमंत्रण जारी होने के बाद।
(2) उप-विनियम (1) के तहत आवेदन अनुसूची के फॉर्म एफ. ए. में बैंक गारंटी अभिषेक सिंह बनाम के
साथ किया जाएगा।

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

विनियमन 33 के प्रयोजनों के लिए समाधान पेशेवर, अब तक
तहत आवेदन दाखिल करना;

उप-विनियम (1) के खंड (ए) के

या

(ख) खंडों के प्रयोजनों के लिए किए गए अनुमानित खर्चों के लिए

(उप-विनियम (1) के खंड (ख) के तहत आवेदन दाखिल करने की तारीख तक विनियम 31 के क), (अ),
(ग) और (घ)।

(3) जहाँ निकासी के लिए आवेदन के खंड (ए) के तहत है

उप-विनियम (1), अंतरिम समाधान पेशेवर प्रस्तुत करेगा

की ओर से न्यायनिर्णायक प्राधिकरण को आवेदन

आवेदक, इसकी प्राप्ति के तीन दिनों के भीतर।

(4) जहाँ निकासी के लिए आवेदन के खंड (बी) के तहत है

उप-विनियम (1), समिति आवेदन पर विचार करेगी,

इसकी प्राप्ति के सात दिनों के भीतर।

(5) जहाँ उप-विनियम (4) में निर्दिष्ट आवेदन है -

नब्बे प्रतिशत मतदान हिस्सेदारी के साथ समिति द्वारा अनुमोदित,

न्यायनिर्णायक प्राधिकरण को समिति की मंजूरी
आवेदक की ओर से।

इस तरह के अनुमोदन के तीन दिनों के भीतर

(6) न्यायनिर्णायक प्राधिकरण आदेश द्वारा अनुमोदन कर सकता है -

उप-विनियम (3) या (5) के तहत प्रस्तुत आवेदन।

(7) जहाँ उप-विनियम (6) के तहत आवेदन स्वीकृत किया जाता है, आवेदक वास्तविक खर्चों के लिए एक
राशि जमा करेगा।

के खंड (क) या खंड (ख) में निर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए उपगत

उप-विनियम (2) न्यायनिर्णायक द्वारा अनुमोदन की तारीख तक

समाधान पेशेवर, जैसा भी मामला हो, तीन दिनों के भीतर

अनुमोदन, जिसमें विफल रहने पर उप-विनियम (2) के तहत प्राप्त बैंक गारंटी

निगमित देनदार के बैंक खाते में ऐसा

अनुज्ञेय किसी अन्य कार्यवाई के प्रति पूर्वाग्रह के बिना लागू किया जाए

संहिता के तहत आवेदक के खिलाफ "।

15. एन. सी. एल. टी., के I.A.No.196 को अस्वीकार करते हुए विवादित आदेश में ओ. सी. द्वारा दायर किए गए, निम्नलिखित निष्कर्ष दर्ज किए गए:

आई.

समझौते और उसकी पूर्ति से संबंधित तथ्य

समझौते की शर्तें विवादित नहीं हैं; [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

स्थगन के बावजूद सीडी के निलंबित निदेशक

ii.

01.03.2021 से प्रभाव के साथ शुरू नहीं किया है

केवल जमा का लेनदेन किया लेकिन सीडी के खाते से निकासी भी की। इस प्रकार उन्होंने उल्लंघन किया है

दिनांकित 01.03.2021 प्रवेश आदेश में निहित निर्देश;

हालाँकि आई. आर. पी. ने प्रस्तुतियाँ दी थीं कि निलंबित

iii.

निदेशक ने कंपनी के खाते से अपने व्यक्तिगत खाते में बड़ी राशि हस्तांतरित की और वहां से समझौते के तहत ओ. सी. को भुगतान किया, लेकिन यह निर्णायक रूप से साबित नहीं हुआ। निलंबित निदेशक और उनके वकील ने इसे तुच्छ बताया

iv.

एन. सी. एल. टी. के समक्ष तर्क जो अभिलेख के विपरीत थे

अनुकूल आदेश प्राप्त करने के लिए;

लेनदारों के 35 दावे, दोनों परिचालन और

वी.

इस बीच वित्तीय दाखिल किए गए हैं। इस तरह से कार्यवाही को वापस लेने से उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा

अधिकार;

एक बार कार्यवाही स्वीकार कर ली गई और आई. आर. पी. ने शुरू कर दिया,

vi.

ऐसी कार्यवाही चल रही है और सभी हितधारक अपने-अपने दावों के साथ कार्यवाही में भाग ले सकते हैं।

और

आई. बी. बी. आई. विनियमों का विनियम 30 ए बाध्यकारी नहीं था

vii.

यह और ऐसा प्रावधान सीडी के लिए किसी भी मदद का नहीं होगा या
इसके निलंबित निदेशक;

16. पक्षों की ओर से विद्वानों की सलाह सुनी और सामग्री का अध्ययन किया

रिकॉर्ड में। 17. श्री श्याम दीवान, आई. बी. सी. की धारा 12 ए जैसे वैधानिक प्रावधानों का उल्लेख करते हुए अपीलार्थी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील,

आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए और एन. सी. एल. टी. विनियम, 2016 के नियम 11 ने प्रस्तुत किया कि ऐसे प्रावधान स्पष्ट रूप से लेनदार और देनदार के बीच निपटान और सी. ओ. सी. के गठन से पहले कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति देते हैं। उनके अनुसार, एक बार जब समझौता हो गया और सी. ओ. सी. के गठन से पहले कार्रवाई की गई, तो एन. सी. एल. टी. ने कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति नहीं देने में गंभीर गलती की। उन्होंने अभिषेक सिंह बनाम को अनुमति देते हुए संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए इस न्यायालय द्वारा पारित कई आदेशों/निर्णयों पर भरोसा किया है।

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

ऐसी याचिकाओं को वापस लेना जहां समझौता किया गया था और एन. सी. एल. टी. द्वारा पारित कुछ आदेशों को भी स्विस् रिबन (पी) लिमिटेड बनाम भारत संघ के मामले में इस अदालत के एक फैसले पर रखा गया था, जिसके बाद केंद्र सरकार ने 25 जुलाई, 2019 की अधिसूचना के माध्यम से आई. बी. बी. आई. विनियमों में विनियमन 30 ए डाला, जिसने सी. ओ. सी. के गठन से पहले याचिकाओं को वापस लेने की अनुमति दी।

18. आई. डी. 1 द्वारा आगे प्रस्तुत किया गया यह प्रभाव है कि एन. सी. एल. टी. इस तथ्य से प्रभावित था कि कई अन्य लेनदार थे जिन्होंने सी. डी. के खिलाफ अपने दावे उठाए थे और इस तरह के लेनदारों को सुने बिना, निकासी की अनुमति उचित नहीं होगी। विद्वान वरिष्ठ वकील के अनुसार, यह एन. सी. एल. टी. द्वारा की गई एक त्रुटि थी क्योंकि इन तीसरे पक्ष के दावों पर विचार नहीं किया जा सकता था और न ही उन्हें अपनी राय बनाने में एन. सी. एल. टी. के साथ वजन करना चाहिए था। एक बार जब सी. ओ. सी. का गठन नहीं किया गया था तो दावे

समझौते को विफल करने के लिए अन्य लेनदारों का उपयोग नहीं किया जाएगा

ओ. सी. और सी. डी. के बीच पहुँचा। उक्त निवेदन के समर्थन में उन्होंने अशोक जी. रजनी बनाम के मामले में इस न्यायालय के एक फैसले पर भरोसा किया है। कमल K.Singh v के मामले में वीकन ट्रस्टीशिप लिमिटेड और Ors.¹² रिलायंस को भी इस अदालत के एक अन्य आदेश पर रखा गया है। दिनेश गुप्ता और अन्ना , 2021 की सिविल अपील No.4993 में दिनांकित 25.08.2021।

19. अगला निवेदन आई. आर. पी. द्वारा की गई आपत्ति से संबंधित है कि निलंबित निदेशक ने आई. आर. पी. से बड़ी राशि हस्तांतरित की थी।

अधिस्थगन की अवधि के दौरान यानी 1 मार्च, 2021 के बाद 18 मार्च, 2021 तक सीडी का खाता उसके व्यक्तिगत खाते में और अन्य तीसरे पक्ष के खाते में। इसके अलावा निलंबित निदेशक के व्यक्तिगत खाते में इस तरह से हस्तांतरित राशि का उपयोग ओ. सी. को समझौते के अनुसार राशि का भुगतान करने में किया गया था। विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा प्रस्तुत निवेदन इस आशय का है कि एन. सी. एल. टी. ने स्वयं एक निष्कर्ष दर्ज किया कि आई. आर. पी. द्वारा ली गई उपरोक्त आपत्ति निर्णायक रूप से स्थापित नहीं हुई थी। उनका कहना है कि उक्त निष्कर्ष के बावजूद एन. सी. एल. टी. स्पष्ट रूप से आई. आर. पी. द्वारा की गई आपत्ति से प्रभावित था।

20. अंत में, श्री दीवान ने कहा कि एन. सी. एल. टी. के पास आई. बी. बी. आई. विनियमों के उस विनियम 30 ए को घोषित करने या मानने का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है

यह बाध्यकारी नहीं था; एन. सी. एल. टी. ने इसकी अनदेखी करने में कानून की गंभीर त्रुटि की।

11 (2019) 4 एससीसी 17 1 2 12 (2022) एससीसी ऑनलाइन एससी 1275।

23] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उक्त प्रावधान। उनके अनुसार, एक वैधानिक प्रावधान को खारिज करना एन. सी. एल. टी. की शक्ति से परे था।

21. उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर यह प्रस्तुत किया गया था कि अपील को अनुमति दी जानी चाहिए, एन. सी. एल. टी. के विवादित आदेश को दरकिनार कर दिया जाए और कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति दी जाए।

22. दूसरी ओर, आई. आर. पी. और अन्य हस्तक्षेपकर्ताओं ने अपील का कड़ा विरोध किया है। उनकी ओर से पेश किए गए निवेदन इस प्रकार हैं -

जैसा कि एन. सी. एल. टी. के समक्ष उठाया गया था जिसका समर्थन किया गया था जिसके परिणामस्वरूप विवादित आदेश पारित किया गया था। वास्तव में उन्होंने आई. डी. 1 के निष्कर्षों का समर्थन किया, उनकी ओर से यह आपत्ति जताई गई है कि अपीलार्थी को एन. सी. एल. टी. के समक्ष अपील दायर करके वैकल्पिक उपाय का लाभ उठाना चाहिए था। आई. आर. पी. ने उनके द्वारा किए गए खर्च के संबंध में उनके धन की निकासी न होने का मुद्दा भी उठाया है। प्रस्तुतियों के समर्थन में, निम्नलिखित निर्णयों पर भरोसा किया जाता है:

पी. मोहनराजव। शाह ब्रदर्स। आईएसपीएटी (पी) Ltd.¹³

(1)

(2)

स्विस रिबन्स प्राइवेट लिमिटेड और ए. एन. आर. वी. भारत संघ
& ओआरएस। (ऊपर)

(3)

देना बैंक (अब बैंक ऑफ बड़ौदा) v. शिवकुमार
रेड्डी & Anr.¹⁴ 14

(4)

एम एस टी सी लिमिटेड बनाम आधुनिक मेटालिक्स लिमिटेड और
अन्य 1 5 15;

(5)

इंडियन ओवरसीज बैंक बनाम श्री दिनकर टी.
वेंकटसुब्रमण्यम, एमटेक ऑटो लिमिटेड के रिज़ॉल्यूशन प्रोफेशनल

(6)

मनोज के. डागा बनाम आई. एस. जी. ई. सी. भारी इंजीनियरिंग लिमिटेड
और अन्य 17;

(7)

नारायणम्मा और अन्न। वी. गोविंदप्पा और Ors.18
राम सरन दास बनाम। सीटीओ कलकत्ता & Anr.¹⁹

(8)

टीटाघुर पेपर मिल्स कं. लिमिटेड बनाम उड़ीसा राज्य 20

(9)

13 (2021) 6 एस. सी. सी. 258

14 (2021) 10 एससीसी 330

15 (2019) एस. सी. सी. ऑनलाइन एन. सी. एल. ए. टी. 146 16 (2017) एस. सी. सी.
ऑनलाइन एन. सी. एल. ए. टी. 584 17 (2020) एस. सी. सी. ऑनलाइन एन. सी. एल. ए. टी.
869 18 (2019) 19 एस. सी. सी. 42

19 एआईआर 1962 एससी 1362

20 (1983) 2 एस. सी. सी. 433 अभिषेक सिंह बनाम।

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

23. ऊपर बताए गए तथ्य विवादित नहीं हैं। आवेदन

सी. ओ. सी. के गठन से पहले दायर किया गया था। प्रवेश आदेश के दो दिनों के भीतर समझौता हो गया था। भुगतान के रूप में

समझौते के अनुसार अगले पांच दिनों के भीतर यानी प्रवेश की तारीख से एक सप्ताह के समय में किया गया था। निकासी के लिए आवेदन 10 वें दिन दायर किया गया था। एन. सी. एल. टी. को आवेदन पर तुरंत निर्णय लेना चाहिए था। एक बार जब पक्षकारों ने सी. ओ. सी. के गठन से पहले ही विवाद का निपटारा कर लिया था, तो आवेदन को तब और वहाँ अनुमति दी जानी चाहिए थी, बजाय इसके कि अन्य लेनदारों को मैदान में कूदने और आई. आर. पी. को आगे बढ़ने की अनुमति दी जाए।

24. अपीलार्थी की ओर से इस न्यायालय के आदेशों की संख्या पर भरोसा किया गया है जिसमें संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत शक्ति - संविधान का प्रयोग निपटान को मंजूरी देने और उन मामलों को वापस लेने की अनुमति देने के लिए किया गया था जिनमें सी. आई. आर. पी. शुरू किया गया था। हम भी ऐसा ही कर सकते थे जो एक आसान तरीका होता लेकिन

एन. सी. एल. टी. द्वारा वापस लेने के आवेदन को अस्वीकार करने और आई. आर. पी. और तीन अन्य ओ. सी. द्वारा दायर किए गए आदेश पर विचार करते हुए हस्तक्षेप आवेदन, हम उठाए गए मुद्दों को तय करने के लिए शुरू कर रहे हैं और सी. ओ. सी. के गठन से पहले निकासी के मामलों से निपटने में एन. सी. एल. टी. द्वारा क्या पाठ्यक्रम अपनाया जाना चाहिए। हम एक-एक करके मुद्दों को उठाते हैं।

वैकल्पिक उपाय

25. वैकल्पिक उपचार की याचिका उच्च न्यायालयों द्वारा स्व-अधिरोपित प्रतिबंध है और यह कभी भी एक पूर्ण प्रतिबंध नहीं है जब तक कि कानून द्वारा वर्जित न हो। इसके अलावा, वर्तमान मामले में, इस न्यायालय ने 2021 में ही एसएलपी पर विचार किया था और 20.04.2021 पर यथास्थिति का आदेश दिया था। तब से काफी समय बीत चुका है। इस प्रकार हम एन. सी. एल. टी. के समक्ष अपील दायर करने के वैकल्पिक उपाय की उपलब्धता से संबंधित उक्त आपत्ति पर विचार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं। हम यहां यह भी नोट कर सकते हैं कि आई. बी. सी. मामलों के निपटारे के लिए एक वैधानिक समय सीमा प्रदान करता है। इसके अलावा, ऐसे मामलों को लंबे समय तक लंबित रखते हुए व्यावसायिक प्रकृति के होने से आई. बी. सी. का उद्देश्य ही विफल हो जाता है।

अधिस्थगन का उल्लंघन

26. हस्तक्षेप करने वालों ने जोरदार तर्क दिया है कि एक बार एन. सी. एल. टी. द्वारा याचिका स्वीकार करने और प्रतिबंध आदेश जारी करने के बाद, आई. बी. सी. की धारा 14 लागू हो गई थी; सी. डी. के खातों में किया गया लेनदेन गैरकानूनी और अवैध होगा जैसे [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

हस्तांतरित सी. डी. के कोष से निपटान राशि का भुगतान

01.03.2021 को अस्वीकार किए जाने के बाद निलंबित निदेशक के खाते में भेजा जाना चाहिए और कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति देने के लिए किसी भी विवेक का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। इस संबंध में, यह कहना पर्याप्त होगा कि एन. सी. एल. टी. भी आई. आर. पी. के उक्त प्रस्तुतिकरण से संतुष्ट नहीं था और उसने इसे मंजूरी नहीं दी है। दूसरा, भले ही कोई लेन-देन हुआ हो

सी. डी. के खाते को गलत लेन-देन माना जा सकता है और किसी भी अन्य कार्यवाही में जहां सी. आई. आर. पी. शुरू की गई है, इस तरह से हस्तांतरित राशि आई. आर. पी. या आर. पी. द्वारा आई. बी. सी. की धारा 66 के तहत वसूल की जा सकती है, बशर्ते कि यह स्थापित किया जा सके कि उक्त लेनदेन उक्त प्रावधान से प्रभावित होंगे।

ओ. सी. के कई दावे

27. उक्त आपत्ति के संबंध में, केवल यह उल्लेख करने की आवश्यकता है कि अन्य लेनदारों को इस तरह के कानूनी उपायों का लाभ उठाने का अपना अधिकार होगा। जो उनके दावों के संबंध में कानून के तहत उनके लिए उपलब्ध हो। यदि वर्तमान मामले में ओ. सी. के साथ समझौता स्वीकार कर लिया जाता है और कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति दी जाती है तो लेनदारों के अपने-अपने दावों के अधिकार कम या प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं होते हैं।

आई. आर. पी. के लिए खर्च के लिए दावे

28. आई. आर. पी. द्वारा खर्च की गई कोई भी राशि उसके लिए कानूनी रूप से स्वीकार्य हो सकती है।

हमेशा एक ही कार्यवाही में वसूली की जाएगी और एन. सी. एल. टी. या न्यायनिर्णायक प्राधिकरण आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए के खंड 7 के तहत इसे मंजूरी प्राप्त करने के लिए अपनी शक्ति के भीतर होगा।

निर्णय इस पर निर्भर थे:

29. वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में और ऊपर की गई चर्चा के लिए किसी भी निर्णय पर भरोसा नहीं किया गया

हस्तक्षेप करने वाले हस्तक्षेप करने वालों के लिए किसी भी तरह से सहायक होते हैं। संक्षेप में इन पर आगे चर्चा की गई है।

30. हस्तक्षेप करने वालों ने P.Mohanraj (ऊपर), स्विस पर भरोसा किया है।

रिबन (ऊपर), देना बैंक (ऊपर), एम. एस. टी. सी. लिमिटेड (ऊपर), इंडियन ओवरसीज बैंक (ऊपर) और मनोक के. डागा (ऊपर), इस प्रस्ताव के लिए कि निपटान अधिस्थगन का उल्लंघन होगा क्योंकि भुगतान में है

सी. आई. आर. पी. की शुरुआत के बाद सी. डी. खाते से धन हस्तांतरित करने के बाद किया गया। जैसा कि पहले ही ऊपर दर्ज किया गया है, हमने माना है कि सबसे पहले, एन. सी. एल. टी. स्वयं इस बात से संतुष्ट नहीं था कि अधिस्थगन का उल्लंघन किया गया था और अगर इसका उल्लंघन किया गया था, तो भी यह एक गलत व्यापार/लेनदेन के बराबर होगा।

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

और उसी को, यदि स्थापित किया जाता है, तो धारा के तहत अन्य ओ. सी. द्वारा सी. आई. आर. पी. के लिए उचित कार्यवाही में आई. आर. पी. या आर. पी. द्वारा हमेशा वसूल किया जा सकता है। 66 आईबीसी से। लेकिन वर्तमान समझौते को रोका नहीं जा सका। इस प्रकार, ये मामले हस्तक्षेप करने वालों के लिए कोई मददगार नहीं हैं।

31. नारायणम्मा और एक अन्य (उपरोक्त) के मामले पर इस प्रस्ताव के लिए भरोसा किया गया है कि यह न्यायालय सीडी के निलंबित निदेशकों के अवैध कार्य पर मुहर नहीं लगाएगा क्योंकि उन्होंने आवेदन स्वीकार किए जाने के बाद सीडी के खाते से धन हस्तांतरित कर दिया है। यहाँ भी,

हम केवल यह जोड़ सकते हैं कि चूंकि एन. सी. एल. टी. स्वयं इस तरह के उल्लंघन से संतुष्ट नहीं था, इसलिए हस्तक्षेप करने वालों द्वारा कोई लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

32. अंत में, हस्तक्षेप करने वालों ने इस प्रस्ताव के लिए राम सरन दास (ऊपर) और टीटाघुर पेपर मिल्स (ऊपर) पर भरोसा किया है कि अपील खारिज की जानी चाहिए क्योंकि अपीलार्थी ने वैकल्पिक उपाय का लाभ नहीं उठाया। इस पहलू से भी, ऊपर दर्ज कारणों से, हस्तक्षेप करने वालों को किसी भी तरह से लाभ नहीं होता है।

विवादित आदेश की वैधता:

33. अब वर्तमान अपील में एन. सी. एल. टी. द्वारा पारित विवादित आदेश की वैधता और शुद्धता पर आते हैं। अधिकांश निष्कर्ष

सी. ओ. सी. के गठन के बाद दाखिल किया जाना चाहिए, क्योंकि इसके लिए 90 की मंजूरी की आवश्यकता होती है। सी. ओ. सी. के प्रतिशत मतदान शेयर। ऐसा कोई प्रावधान नहीं था जो सी. ओ. सी. के गठन से पहले कार्यवाही को वापस लेने से संबंधित हो। यहाँ तक कि

विनियमन 30 ए, जैसा कि पहले मौजूद था, सी. ओ. सी. के गठन के समक्ष दायर वापसी के लिए आवेदन पर विचार करने पर विचार नहीं करता था। इस मुद्दे को इस न्यायालय द्वारा स्विस रिबन (ऊपर) के मामले में उसके पैराग्राफ 82 में फ्लैग किया गया था जिसे यहाँ नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

" 82. यह स्पष्ट है कि एक बार धारा 7 से 9 के तहत किसी लेनदार की याचिका को स्वीकार करने के बाद संहिता लागू हो जाती है, तो न्यायनिर्णायक प्राधिकरण के समक्ष जो कार्यवाही होती है, वह एक सामूहिक कार्यवाही होने के नाते, आर. ई. एम. में एक कार्यवाही है। आर. ई. एम. में कार्यवाही होने के कारण, यह आवश्यक है [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

कि समाधान प्रक्रिया की देखरेख करने वाले निकाय से किसी भी व्यक्तिगत निगमित देनदार को अपने दावे का निपटान करने की अनुमति देने से पहले परामर्श किया जाना चाहिए। एक सवाल उठता है कि लेनदारों की समिति के गठन से पहले क्या होना है (निर्दिष्ट समय सीमा के अनुसार, अंतरिम समाधान पेशेवर की नियुक्ति की तारीख से 30 दिनों के भीतर किसी भी समय लेनदारों की समिति नियुक्त की जा सकती है)। हम यह स्पष्ट करते हैं कि किसी भी स्तर पर जहां अभी तक लेनदारों की समिति का गठन नहीं किया गया है, एक पक्ष कर सकता है

एन. सी. एल. टी. से सीधे संपर्क करें, जो न्यायाधिकरण, एन. सी. एल. टी. नियम, 2016 के नियम 11 के तहत अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए, वापस लेने या निपटान के लिए एक आवेदन की अनुमति या अस्वीकृति दे सकता है। यह होगा सभी संबंधित पक्षों को सुनने और सभी पर विचार करने के बाद निर्णय लिया गया

प्रत्येक मामले के तथ्यों पर प्रासंगिक कारक।

इस अदालत ने एन. सी. एल. टी. को एन. सी. एल. टी. नियमों के नियम 11 के तहत अपनी शक्तियों का उपयोग करने के लिए कहा था।

34. यह स्विस् रिबन (उपरोक्त) के मामले में इस न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणियों के बाद था, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है और इस पर भी विचार किया गया है

पहलू यह है कि इस न्यायालय द्वारा बड़ी संख्या में आदेश पारित किए जा रहे थे

संविधान के अनुच्छेद 142 को लागू करते हुए कि आई. बी. बी. आई. विनियमन जो

भारतीय दिवाला और दिवालियापन बोर्ड 2 1 द्वारा धारा 5,7,9,14,15,17,18,21,24,25,29,30,196,208 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए धारा 240 के साथ धारा 30 ए प्रतिस्थापित की गई थी।

अधिसूचना दिनांक 25.07.2019। बोर्ड को शक्तियाँ प्रदान की गई -

आई. बी. सी. और अन्य संबद्ध धाराओं के विघटन 240 को संदर्भित विभिन्न उद्देश्यों के लिए फ्रेम विनियम। ये नियम चरित्र में गौण हो सकते हैं लेकिन फिर भी एक वैधानिक स्वाद ले जाएंगे और एन. सी. एल. टी. पर बाध्यकारी होंगे। एन. सी. एल. टी. ने यह अभिनिर्धारित करने में त्रुटि की कि विनियमन 30 ए का कोई बाध्यकारी प्रभाव नहीं होगा। यह स्विस् रिबन (उपरोक्त) के निर्णय के बाद 25.01.2019 पर IBBI विनियमों में विनियमन 30A को प्रतिस्थापित करने के उद्देश्य को विफल करने के बराबर होगा।

35. आई. बी. सी. की धारा 12 ए आई. बी. सी. की धारा 7,9 और 10 के तहत स्वीकार किए गए आवेदनों को वापस लेने की अनुमति देती है। यह इस तरह की वापसी की अनुमति देता है

सी. ओ. सी. के 90 प्रतिशत मतदान हिस्से के अनुमोदन के साथ ऐसे तरीके से आवेदन जो निर्दिष्ट किए जाएं। सी. ओ. सी. की भूमिका और उक्त वापसी को मंजूरी देने के लिए उसके मतदान हिस्से का 90 प्रतिशत

तभी काम में आएगा जब सी. ओ. सी. का गठन किया जाएगा। धारा 12 ए में विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। 21 संक्षेप में "आईवीवीआई"

अभिषेक सिंह बनाम। हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

ऐसे आवेदनों को वापस लेना जहां सी. ओ. सी. का गठन नहीं किया गया था, लेकिन साथ ही यह सी. ओ. सी. के गठन से पहले भी वापस लेने के लिए आवेदनों पर रोक नहीं लगाता है। इसलिए, निकासी के लिए धारा 12 ए के तहत आवेदन को लंबित नहीं रखा जा सकता है।

सी. ओ. सी. का गठन, जहां इस तरह का आवेदन पहले दायर किया गया था सीओसी का गठन। आई. बी. बी. आई. जिसके पास विनियम बनाने की शक्ति थी

जहां भी आवश्यक हो और विशेष रूप से आई. बी. सी. की धारा 240 में उसमें शामिल विषयों के लिए तदनुसार विनियमन 30 ए को प्रतिस्थापित किया गया था जो धारा के तहत दायर निकासी के लिए आवेदन के निपटान की प्रक्रिया से संबंधित था।

12 आई. बी. सी. का ए. आई. बी. सी. का प्रतिस्थापित विनियमन 30 ए, जैसा कि आज भी है, स्पष्ट रूप से निकासी आवेदनों के लिए प्रदान किया गया है जिन पर पहले विचार किया जा रहा है।

सीओसी का गठन। यह किसी भी तरह से आई. बी. सी. की धारा 12 ए का उल्लंघन नहीं करता है। दोनों प्रावधानों में कोई विसंगति नहीं है। यह.

केवल आई. बी. सी. की धारा 12 ए के माध्यम से पेश किए गए कारण को आगे बढ़ाता है। इस प्रकार, एन. सी. एल. टी. एक विपरीत दृष्टिकोण लेने में गलती में पड़ गया।

36. कमल के. सिंह (ऊपर) में, स्विस रिबन (ऊपर) के मामले में रिपोर्ट के पैराग्राफ 82 पर भरोसा करते हुए, सर्वोच्च न्यायालय, जो

ऐसी ही स्थिति से निपट रहा था जहाँ समझौता हो गया था

सी. ओ. सी. के गठन से पहले कार्यवाही को वापस लेने की अनुमति दी गई थी और यह अभिनिर्धारित किया गया था कि एन. सी. एल. टी. नियमों के नियम 11 के तहत दायर आवेदन बनाए रखने योग्य होंगे और उसमें ओ. सी. को इस तरह से आगे बढ़ाना उचित होगा।

आवेदन।

37. अशोक जी. रजनी (ऊपर) के मामले में, एन. सी. एल. टी. के बाद 08.08.2021 पर पक्षों के बीच समझौता हो गया था।

आई. बी. सी. की धारा 7 के तहत आवेदन को दिनांकित आदेश के माध्यम से स्वीकार किया गया

03.08.2021 . अपील पर, एन. सी. एल. ए. टी. ने दिनांक 1 के आदेश के माध्यम से सी. ओ. सी. के गठन पर रोक लगा दी, लेकिन नियम 11 के तहत अपनी शक्तियों का प्रयोग करने से इनकार कर दिया। एनसीएलएटी नियम। उक्त आदेश को इस अदालत में चुनौती दी गई थी। इस न्यायालय ने पैराग्राफ 29 और 30 में अपने आदेश में कारण दिए कि वापस लेने के आवेदनों को तीसरे पक्ष द्वारा सी. ओ. सी. के गठन के समक्ष क्यों नहीं दबाया जा सकता है। उक्त अनुच्छेदों को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

" 29. निगमित देनदार द्वारा किए गए निवेशों को ध्यान में रखते हुए और अपने अस्तित्व और आजीविका के लिए निगमित देनदार पर निर्भर लोगों की संख्या को देखते हुए, ऐसा कोई कारण नहीं है कि

सी. आई. आर. पी. के लिए आवेदक को अपने विवादों के निपटारे के बाद अपने आवेदन को वापस लेने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

30. [2023] 4 एस. सी. आर. के खिलाफ दावों की प्रत्याशा में लेनदारों की समिति के गठन से पहले समझौते को दबाया नहीं जा सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

तीसरे व्यक्ति से निगमित देनदार। एक की वापसी

आवेदक द्वारा सी. आई. आर. पी. के लिए आवेदन किसी अन्य वित्तीय लेनदार को आई. बी. सी. के तहत कार्यवाही का सहारा लेने से नहीं रोकेगा। समाधान प्रक्रिया को पूरा करने के लिए समय सीमा का पालन करने की तात्कालिकता समझौते को दबाने का कारण नहीं है।

38. इस न्यायालय ने कमल के. सिंह (उपरोक्त) के मामले में आदेश पर भरोसा करते हुए अनुच्छेद 32 में एन. सी. एल. टी. को निपटान आवेदन पर विचार करने और उसमें की गई टिप्पणियों के आलोक में निर्णय लेने का निर्देश जारी किया। उक्त अनुच्छेद यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है:

" 32. आई. बी. सी. की धारा 12 ए के तहत निपटान के लिए आवेदन न्यायनिर्णायक प्राधिकरण (एन. सी. एल. टी.) के समक्ष लंबित है। एन. सी. एल. टी. ने लेनदारों की समिति के गठन पर रोक लगा दी है। आक्षेपित आदेश केवल एक अंतरिम आदेश है जिसमें हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। आई. बी. सी. की धारा 62 के तहत एक अपील में, कानून का कोई सवाल नहीं है जिसके लिए इस न्यायालय द्वारा निर्धारण की आवश्यकता हो। तदनुसार, अपील खारिज कर दी जाती है। एन. सी. एल. टी. को निपटान आवेदन को लेने और इसे ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने का निर्देश दिया गया है।

ऊपर की गई टिप्पणियों में से "

सी. डी. और उसके वकील। एन. सी. एल. टी. ने अपनी नाराजगी और नाराजगी दर्ज की है। कुछ स्थानों पर एन. सी. एल. टी. के समक्ष सी. डी. और उसके वकील के आचरण का उल्लेख करते हुए, और शायद इसी कारण से, एन. सी. एल. टी. ने दिनांकित एन. सी. एल. टी. आदेश में अवलोकन की अनदेखी करते हुए विवादित आदेश पारित किया।

26.03.2021 जिसने विशेष रूप से व्यक्त किया था कि न्यायनिर्णायक प्राधिकरण (एन. सी. एल. टी.) तकनीकीताओं पर खड़े हुए बिना निकासी आवेदन पर आदेश पारित करेगा।

40. दोनों पक्षों ने स्विस् रिबन (ऊपर) के मामले में फैसले के पैराग्राफ 82 पर भरोसा किया है। याचिकाकर्ता के अनुसार, एन. सी. एल. टी. को एन. सी. एल. टी. नियमों के नियम 11 के तहत अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए था, जबकि हस्तक्षेप करने वालों के लिए यह प्रस्तुत किया जाता है कि इस न्यायालय ने कहा था कि नियम 11 के तहत शक्ति का प्रयोग सभी संबंधित पक्षों को सुनने के बाद किया जाएगा। यह ध्यान दिया जा सकता है कि जिस समय कार्यवाही को वापस लेने के लिए आवेदन दायर किया गया था, उस समय सी. ओ. सी. का गठन नहीं किया गया था क्योंकि इसके अलावा कोई अन्य संबंधित पक्ष नहीं हो सकता था।

ओ. सी., सी. डी. और आई. आर. पी. आई. बी. सी. की धारा 12 ए और आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए के तहत आवेदनों के निपटारे में एन. सी. एल. टी. के कारण हुई देरी के कारण ही बड़ी संख्या में लेनदारों ने अभिषेक सिंह बनाम.

हुहतामाकी पी. पी. एल. लि. & एएनआर। [विक्रम नाथ, जे।]

उनके दावे। न्याय के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अंतर्निहित शक्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए, जो हमारी राय में, एन. सी. एल. टी. लागू करने में विफल रहा।

41. आई. बी. बी. आई. विनियमों का विनियम 30 ए इस तरह के प्रावधान के तहत दायर आवेदनों से निपटने के लिए एक पूर्ण तंत्र प्रदान करता है। खर्च के लिए अपने दावे के संबंध में आई. आर. पी. द्वारा उठाए गए मुद्दे पर उक्त प्रावधान के तहत अच्छी तरह से ध्यान दिया जाता है। ओ. सी. द्वारा पूरा किए जाने वाले आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए में विभिन्न सुरक्षा उपाय प्रदान किए गए हैं जिन्हें स्पष्ट रूप से पूरा किया गया है क्योंकि इस संबंध में न तो आई. आर. पी. द्वारा कोई शिकायत है और न ही यह एन. सी. एल. टी. के विवादित आदेश से स्पष्ट है। इस प्रकार, आई. आर. पी. द्वारा उठाई गई आपत्ति इस अपील में किसी भी विचार के योग्य नहीं है।

42. ऊपर दर्ज सभी कारणों से, एन. सी. एल. टी. के विवादित आदेश को कायम नहीं रखा जा सकता है। विनियम 30 ए के तहत दायर आवेदन

आई. बी. बी. आई. विनियमों की अनुमति दी जानी चाहिए।

43. तदनुसार, अपील की अनुमति दी जाती है और एन. सी. एल. टी. के विवादित आदेश को खारिज कर दिया जाता है। इसके अलावा, आई. बी. बी. आई. विनियमों के विनियम 30 ए के तहत आवेदन के साथ 2021 की आवेदन संख्या 196 को भी अनुमति दी जानी चाहिए। ओ. सी. द्वारा आई. बी. सी. की धारा 9 के तहत दायर आवेदन वापस ले लिया जाएगा। यह भी प्रावधान किया गया है कि खर्चों के लिए कोई भी दावा

एन. सी. एल. टी. द्वारा कानून के अनुसार खर्च किया जा सकता है।

श्रेणी और वे उचित कार्यवाहियों में अपने स्वयं के स्वतंत्र दावे करने के लिए स्वतंत्र होंगे जिन पर तदनुसार कार्रवाई की जाएगी। कानून के साथ।

45. लंबित आवेदन, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाता है।

अपील की अनुमति दी गई।

निधि जैन

(सहायक: पार्थ गोस्वामी और तमन्ना, एलसीआरएएस)